कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़वानी

परिस्थितियों का अवलोकन कर फसलवार अनुशंसाऐं

गेहूँ

1. गेंहूँ की समय से बुवाई के लिए उपयुक्त किस्में एच. डब्लू –2004, जी.डब्लू –322, जी.डब्लू –273, जे.डब्लू –1142, जे.डब्लू –3020, जे.डब्लू –366, एच.आई–8663, एच.आई–8627 एच. आई–1531 तथा देर से बुवाई के लिए उपयुक्त किस्म एम.पी. 4010 की अनुशंसा की जाती है। कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़वानी द्वारा जी.डब्लू –322, जी.डब्लू –273, तथा एम.पी. 4010 किस्मो का प्रदर्शन दिया गया था जिसके परिणाम उत्साहवर्धक रहे।
2. गेंहू की बीजदर 40 किग्रा/एकड़ के अनुसार थायरम तथा एजोटोवेक्टर कल्चर द्वारा बीजोपचार करके ही बोएं। प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करें।
3. बुवाई की दूरी सिंचित अवस्था में 25 सेमी कतार से कतार की दूरी तथा असिंचित अवस्था में 30 सेमी. की दूरी पर करें।
4. गेंहूँ में मृदा परीक्षण के आधार से सिंचित अवस्था में 120 किग्रा. नत्रजन, 60 किग्रा. फास्फोरस तथा 40 किग्रा. पोटाश का प्रति हे. की दर से एवं असिंचित खेती के लिए 40:20:10 एन.पी.के. का प्रयोग करें। फास्फोरस एवं पोटाश ककी पूरी मात्रा एवं नत्रजन की एक तिहाई मात्रा का प्रयोग बुवाई के समय आधार खाद के रूप में करें। नत्रजन की शेष मात्रा को 2 बराबर भागों में बांटकर आधी मात्रा प्रथम सिंचाई (21 दिन के बाद)के समय तथा शेष मात्रा द्वितीय सिंचाई के समय टापड्रेसिंग विधि द्वारा प्रयोग करें। उर्वरको के अलावा 20 टन गोबर ककी पूर्णतः सड़ी हुई खाद (दीमक रहित) का /हे. की दर से प्रयोग करें। खाद को फर्टीकम सीडड्रिल से बीज से ज्यादा गहराई पर डालें।
5. गेंहूँ की फसल में खेत को प्रथम 30 दिनो तक खरपतवार मुक्त रखें।
6. गेहूँ में दीमक (उदी) के नियंत्रण के लिए सिंचाई के पानी के साथ क्लोरोपायरीफॉस दवा का 1 – 1.5 ली/हे. की दर से प्रयोग करें।